

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र, सत्र 12, नए नियम में विशेष रहस्योद्घाटन, अवतार, जॉन, दुनिया का प्रकाश, जीवनदाता, परमेश्वर का पुत्र

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं जो रहस्योद्घाटन और पवित्र शास्त्र पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 12 है, नए नियम में विशेष रहस्योद्घाटन, अवतार, जॉन, दुनिया का प्रकाश, जीवनदाता, ईश्वर का पुत्र।

हम रहस्योद्घाटन और पवित्र शास्त्र के सिद्धांतों पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं।

हम नए नियम में विशेष रहस्योद्घाटन का अध्ययन कर रहे हैं, और वर्तमान में, हमारी सबसे बड़ी चिंता हमारे प्रभु के अवतार का वह विशेष रहस्योद्घाटन है। हम यीशु को दुनिया की रोशनी के रूप में अध्ययन कर रहे हैं, और इस अवधारणा को अध्याय 1 में पेश किया गया है। यह अध्याय 9 से पहले अन्य स्थानों पर दिखाई देता है, मुझे लगता है कि उदाहरण के लिए जॉन अध्याय 3 में, लेकिन चलिए सीधे अध्याय 9 पर चलते हैं क्योंकि यह इसका मुख्य उपचार है। आप अंधे पैदा हुए आदमी की कहानी से अच्छी तरह वाकिफ हैं, जिस कहानी के दौरान यीशु ने खुलासा किया कि वह दुनिया की रोशनी है।

वास्तव में उन्होंने अध्याय 8 में भी यही बात कही थी। 8:12 में भी उन्होंने कुछ इसी तरह के शब्द कहे थे। मैं सिर्फ निरंतरता के लिए इसका जिक्र कर रहा हूँ। हम वहाँ इस पर चर्चा नहीं करेंगे।

8:12 में वह कहता है कि मैं जगत की ज्योति हूँ। यहाँ अध्याय 9 में इस विषय पर विस्तृत चर्चा की गई है। अंधा आदमी जन्म से ही अंधा था।

शिष्यों ने एक मिथक को मन में रखा है कि उसका अंधापन उसकी माँ के पाप के लिए या उसके जन्म से पहले किसी तरह से उसके लिए सजा थी। बल्कि यीशु ने कहा कि नहीं, यह सच नहीं है। बल्कि यह परमेश्वर के कार्य के प्रदर्शन का अवसर है।

उसने ज़मीन पर थूकने और मिट्टी और थूक के मिश्रण को उस आदमी की आँखों में लगाने का असामान्य तरीका इस्तेमाल किया। यह हमें उल्टा लगता है लेकिन यीशु ने अपने स्पर्श का इस्तेमाल किया और उस आदमी ने शिकायत नहीं की क्योंकि सिलोम के कुंड में जाकर नहाने के बाद पहली बार वह देख सकता था, जिसका मतलब था सुगंध। अब उसने यीशु को पहले कभी नहीं देखा था क्योंकि यीशु जाहिर तौर पर आगे बढ़ चुके थे।

वैसे भी, यहाँ चौथे सुसमाचार में कुछ हास्य है जहाँ लोग यह अनुमान लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि यह आदमी कौन है जो देख सकता है। और हम उसके पड़ोसियों के बारे में बात कर रहे हैं। कुछ लोगों ने कहा कि यह एक अंधा आदमी था।

अब वह देख सकता है। दूसरों ने कहा नहीं, यह असंभव है। यह सिर्फ़ कोई ऐसा व्यक्ति है जो उसके जैसा दिखता है।

और यह बात मुझे हंसाती है। और वह आदमी कहता है कि वह कहता रहा कि मैं ही वह आदमी हूँ। वे भ्रमित हैं।

उन्हें यकीन नहीं है। नहीं, लेकिन यह कोई ऐसा ही व्यक्ति है। मैं ही वह आदमी हूँ, वह बार-बार कहता है।

तुम्हारी आँखें कैसे खुली हैं? फिर उसने कीचड़ और धुलाई की कहानी सुनाई। अब, फरीसी इस बात से खुश नहीं हैं, और वे इस आदमी को पूछताछ के लिए लाते हैं। उसने नॉर्मन विसेंट पील का कोर्स नहीं किया है कि कैसे दोस्त बनाए जाएँ और उन्हें प्रभावित करें क्योंकि वह बहुत स्पष्टवादी है और कभी-कभी, उनके प्रति असम्मानजनक लगता है, लेकिन वह यह विश्वास नहीं कर सकता कि वे आध्यात्मिक रूप से इतने मूर्ख हैं।

फिर से, जॉन ने व्यंग्य और हास्य का प्रयोग किया है। एक पूर्व अंधा व्यक्ति ईश्वर की बातों को शासकों, इस्राएल के नेताओं, इस्राएल के आध्यात्मिक नेताओं से बेहतर देखता है। ओह, उन्हें यकीन है कि वह ईश्वर से नहीं है क्योंकि उसने शनिवार को एक आदमी को ठीक किया, जो कि एक भयानक बात है।

बेशक, पुराने नियम में कहा गया है कि तुम अंधे लोगों को ठीक नहीं करोगे। इसमें ऐसा कुछ भी नहीं कहा गया है। जैसा कि उस व्यक्ति ने खुद बताया है, अंधे लोगों को अपनी दृष्टि वापस मिलने का कोई सबूत नहीं है।

यह एक अद्भुत चमत्कार है। उन्हें उछल-कूद करनी चाहिए, परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए और उसका धन्यवाद करना चाहिए। वैसे, प्रेरितों के काम अध्याय 6 में शनिवार को विवादास्पद उपचार में यीशु की कुछ बुद्धिमत्ता दिखाई गई है।

उन्होंने ऐसा करने के लिए अपनी सीमा से बाहर जाकर काम किया। उन्होंने इस तरह से विवाद को जन्म दिया क्योंकि इसने नेताओं को चुनौती दी। इसने उन्हें अपनी प्राथमिकताओं के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया, मच्छर को छानकर ऊँट को निगलने के बारे में, सब्त के नियमों पर इस हद तक जोर दिया कि वे अपने स्वयं के मसीहा को भूल गए, और ऊँट को निगलने से मसीहा चूक गए।

प्रेरितों के काम 6 की आयत 6 के आस-पास लिखा है कि यहाँ तक कि बहुत से याजकों ने भी उस पर विश्वास किया। मुझे नहीं लगता कि अगर यीशु उनके नियमों के अनुसार खेलता तो ऐसा होता। उसने कठोर खेल खेला।

उसने उन्हें चुनौती दी। उसने उन्हें उकसाया। उसने बुजुर्गों की परंपराओं का खंडन किया और उससे भी अधिक, यह दिखाते हुए कि वह सब्त का प्रभु था, जैसा कि मार्क की अभिव्यक्ति में कहा गया है।

वैसे भी, उस आदमी की यीशु के बारे में समझ बढ़ती है, और श्लोक 17 में वह कहता है कि वह एक भविष्यवक्ता है। यहूदी नेता उस आदमी से पूछताछ करते हैं। माता-पिता, वे आगे नहीं आते।

वे इसलिए डरे हुए हैं क्योंकि यहूदी लोग यीशु पर विश्वास करने वाले किसी भी व्यक्ति को आराधनालय से बाहर निकाल देंगे। यह वह शब्द है जो इस इलाके में पहले से ही मौजूद है। हम जानते हैं कि वह हमारा बेटा था।

हम जानते हैं कि वह जन्म से अंधा था। हमें नहीं पता कि अब हम कैसे देख सकते हैं। आपको उससे पूछना चाहिए। उन्होंने राजनीतिक रूप से सही होने के बारे में कोर्स किया था। ओह बाँय। इसलिए, उन्होंने उस आदमी को दूसरी बार बुलाया, और यह एक बड़ी गलती थी।

परमेश्वर की महिमा करो। हम जानते हैं कि यह आदमी पापी है। वह जवाब देता है, वह पापी है या नहीं, मुझे नहीं पता।

एक बात मैं जानता हूँ, हालाँकि मैं अंधा था, लेकिन अब मैं देख सकता हूँ। यह बहुत ही विडंबनापूर्ण है। यह दुखद रूप से हास्यास्पद है।

वे आध्यात्मिक रूप से अंधे हैं। एक पूर्व अंधा व्यक्ति उन्हें दिखाने की कोशिश करता है, लेकिन वे नहीं देख पाते। वह कहानी फिर से सुनाता है।

तुम उसके शिष्य नहीं बनना चाहते, है न? वह बस उन्हें बहका रहा है। इस आदमी को आराधनालय से बाहर निकाल दिया जाएगा। उन्होंने उसे बुरा-भला कहा। तुम उसके शिष्य हो। हम मूसा के शिष्य हैं। हम नहीं जानते कि यह आदमी कहाँ से आया है।

हम मूसा के बारे में निश्चित हैं। श्लोक 30, अब यह एक आश्चर्यजनक बात है। उसे बस चुप रहना चाहिए था और वहाँ से निकल जाना चाहिए था।

नहीं, लेकिन वह यीशु की गवाही दे रहा था, जिसे वह पूरी तरह से जानता भी नहीं था। थोड़ी देर बाद उसका जवाब और भी उल्लेखनीय है। वह पूछता है, क्या तुम मनुष्य के पुत्र पर विश्वास करते हो? तुम बस मुझे उसका पता बताओ।

अगर तुम वही आदमी हो जिसने मेरी आँखें ठीक की हैं, तो मुझे उसका पता बताओ। मैं उसका अनुसरण करने जा रहा हूँ। मैं वही हूँ, और वह यीशु में विश्वास करता है।

ओह, मेरा वचन। तुम नहीं जानते कि वह कहाँ से आता है, फिर भी उसने मेरी आँखें खोल दीं। हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता, लेकिन अगर कोई परमेश्वर का उपासक है और उसकी इच्छा पूरी करता है, तो परमेश्वर उसकी सुनता है।

दुनिया की शुरूआत से लेकर अब तक कभी ऐसा नहीं सुना गया कि किसी ने जन्म से अंधे व्यक्ति की आँखें खोली हों। अगर वह परमेश्वर की ओर से न हो, तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। उन्होंने उसे उत्तर दिया।

आप पूरी तरह से पाप में पैदा हुए थे, जाहिर तौर पर उस मिथक का समर्थन करते हुए जिस पर शिष्यों ने सवाल उठाए थे, जिसे शिष्यों ने मनोरंजन किया था, और जिसे यीशु ने इस अध्याय के शुरूआती छंदों में सही किया था। और उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया, संभवतः आराधनालय से बाहर। वह अब एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास धार्मिक घर नहीं है।

उसके लिए बहुत ज़्यादा विकल्प नहीं हैं। जैसे परमेश्वर ने बगीचे में आदम और हव्वा को ढूँढ़ा, वैसे ही यीशु ने अंधे आदमी को ढूँढ़ा। यीशु, जो दुनिया की रोशनी है, ने इस आदमी को रोशन किया, ऐसा करके परमेश्वर को प्रकट किया, परमेश्वर की करुणा को प्रकट किया, परमेश्वर के काम को दिखाया जैसा कि यीशु ने कहा था कि वह करेगा।

क्या आप मनुष्य के पुत्र पर विश्वास करते हैं? वह कौन है, सर? शायद यहाँ प्रभु का अच्छा अनुवाद है, ताकि मैं उस पर विश्वास कर सकूँ। आपने उसे देखा है, और यह वही है जो आपसे बात कर रहा है। उसने कहा, प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ, और उसने उसकी पूजा की।

यह एक आश्चर्यजनक बात है। यीशु के सामने झुकने वाले और अलौकिक मदद माँगने वाले ज़्यादातर लोग आराधना नहीं कर रहे हैं। हमारे लिए नए नियम में त्रिएकत्व के सिद्धांत को पढ़ना बहुत आसान है।

अब, वह भगवान है, और वह पूजा के योग्य है, जिसे थॉमस बाद में उसे देता है। लेकिन उसके सामने झुकने वाले ज़्यादातर लोग बस हताश लोग हैं। क्या आप अपने बच्चे या अपने करीबी दोस्त के उपचार के लिए झुकेंगे? हाँ, आप ऐसा करेंगे।

क्या इसका मतलब यह है कि आप पूजा कर रहे हैं? नहीं, वे पूजा नहीं कर रहे हैं। लेकिन यह ईसाई पूजा जैसा कुछ दिखता है। यह आश्चर्यजनक है।

ओह, मेरा वचन। प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ, और उसने उसकी आराधना की। और यहाँ यीशु के कुछ रहस्यमय शब्द आते हैं।

बाद में एक गरीब शिष्य ने कहा, अब, अब आप साफ-साफ बोल रहे हैं। मुझे लगता है कि यह अध्याय 16 हो सकता है। हल्लिलूयाह।

अब हम समझ सकते हैं कि आप क्या कह रहे हैं। यीशु ने कहा, न्याय के लिए, मैं दुनिया में आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे देख सकें, और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएँ। पहली नज़र में, हम इसे

शाब्दिक रूप से ले सकते हैं क्योंकि उसने किसी ऐसे व्यक्ति को देखने के लिए प्रेरित किया जो शारीरिक रूप से नहीं देख सकता था।

लेकिन एक मिनट रुकिए। और इसलिए कि जो लोग देखते हैं वे अंधे हो जाएं। यीशु द्वारा किसी को अंधा करने का कोई सबूत नहीं है।

पॉल एक जादूगर के रूप में अस्थायी नौकरी करता है। लेकिन यह असामान्य है। नहीं।

तो, भाषा आध्यात्मिक है। मैं दुनिया में न्याय करने आया हूँ, ताकि जो लोग नहीं देखते, जो आध्यात्मिक दृष्टि से वंचित हैं, जब वे दुनिया की रोशनी के संपर्क में आते हैं, तो आध्यात्मिक दृष्टि प्राप्त कर सकें। अंधे आदमी ने न केवल शारीरिक दृष्टि प्राप्त की, बल्कि उसने यीशु पर विश्वास किया और उसकी पूजा की।

लेकिन यीशु इसलिए आए कि उनके प्रकाश में, दुनिया के प्रकाश में, जो लोग दावा करते हैं कि वे उनके अलावा देख सकते हैं, वे अपने पापों में पुष्ट हो सकते हैं, अंधे हो सकते हैं। और यही यहूदी नेताओं के साथ होता है, जो खुद को विनम्र नहीं करते और जो सत्य के प्रति खुले नहीं होते। ओह, इसके अपवाद भी हैं।

अध्याय तीन में निकोदेमुस यीशु से मिलता है। उसे एक तरह से उसकी जगह पर रखा गया है। अध्याय सात में जब महासभा मामले पर बहस कर रही होती है, तो वह यीशु के पक्ष में खड़ा होता है।

अध्याय 19 में यीशु के क्रूस पर चढ़े शरीर के लिए पूछता है। ऐसा करके, मुझे लगता है, वह अपने विश्वास का इज़हार कर रहा है। एक उद्धारकर्ता में भी, वह नहीं जानता था कि वह अभी तक जीवित है या नहीं।

उसके पास के कुछ फरीसी ये बातें सुनकर कहने लगे, क्या हम भी अंधे हैं? अगर उन्होंने अपना अंधापन स्वीकार कर लिया। उनका मतलब है, क्या हम श्रेष्ठ आध्यात्मिक द्रष्टा नहीं हैं जो इस दुष्ट अंधे आदमी की तरह भीड़ का न्याय करते हैं? और यीशु समझते हैं कि शब्दों का क्या मतलब है। क्या हम तुम्हारे प्रकाश में, दुनिया के प्रकाश में अपने अंधेपन को स्वीकार करते हैं? यीशु ने कहा, अगर तुम अंधे होते, अगर तुम अपनी आध्यात्मिक ज़रूरत को देखते, मैं रूपक बदलता हूँ, अपनी सेवकाई के प्रकाश में, मैं तुम्हारे पापों को क्षमा कर देता।

लेकिन अब जब आप कहते हैं कि हम देखते हैं, क्योंकि वे दुनिया की रोशनी को अस्वीकार करते हैं, तो आपका अपराध बना रहता है। आपका अंधकार और भी गहरा हो गया है। आपको माफ़ नहीं किया गया है।

आप देखिए, यीशु जगत की ज्योति है। यही उस अध्याय का सार है। हम अध्याय 12 में ज्योति के दुखद रूप से लुप्त होने को भी देखते हैं।

अध्याय 12 में, यीशु कहते हैं कि उनका समय आ गया है। अब मरने और जी उठने और पिता के पास लौटने का समय आ गया है। और दुख की बात है, जैसा कि पहले ही प्रस्तावना में कहा गया है, अध्याय 1:9 से 11, 9 के बाद 10 और 11 में प्रमुख प्रतिक्रिया प्रकाश के संदर्भ में अवतार है, और प्रमुख प्रतिक्रिया अस्वीकृति है।

अध्याय 12 में पहले 12 अध्यायों में से मुख्य प्रतिक्रिया, अस्वीकृति को दर्शाया गया है। और 20, 30 और 31 में कथन का उद्देश्य यूहन्ना 12 में दिए गए कथन के समानांतर है। यूहन्ना 12, 35 में यीशु ने कहा, ज्योति थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में रहेगी।

जब तक तुम्हारे पास रोशनी है, चलते रहो, कहीं ऐसा न हो कि अँधेरा तुम्हें पकड़ ले। जो अँधेरे में चलता है, वह नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है। याद रखो, उनके पास स्ट्रीट लाइट नहीं थी।

थॉमस एडिसन तब तक नहीं थे। उनके पास ये छोटे-छोटे लैंप थे। जब तक तुम्हारे पास रोशनी है, रोशनी पर विश्वास करो ताकि तुम रोशनी के बेटे बन सको।

जब यीशु ने ये बातें कहीं, तो वह चला गया और उनसे छिप गया। जॉन के सुसमाचार पर एक ब्रिटिश विद्वान द्वारा लिखी गई एक प्रसिद्ध टिप्पणी, जिसका नाम मुझे अभी याद नहीं है। अगर मैं कोशिश नहीं करूंगा, तो यह आ सकता है।

इस खंड का शीर्षक है, दुनिया का प्रकाश। दुनिया का प्रकाश वापस चला जाता है, और यह सटीक है। यह सटीक है।

और यहाँ वे शब्द हैं जो यूहन्ना 20, 20, और 31 के समानांतर हैं। उन आयतों में कहा गया है कि यीशु ने अपने शिष्यों की उपस्थिति में कई अन्य चिन्ह दिखाए, जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। ये इसलिए लिखे गए हैं ताकि तुम विश्वास करो कि यीशु मसीह है, परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करके तुम उसके नाम से जीवन पा सकते हो।

हमें इस कथन को उसी के प्रकाश में समझना चाहिए, या बल्कि उस कथन को उसी के प्रकाश में समझना चाहिए, जो पहला है। यूहन्ना 12:37, हालाँकि उसने उनके सामने इतने सारे चिन्ह दिखाए थे, फिर भी उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया। समानताएँ उल्लेखनीय हैं।

उनके सामने, खास तौर पर यहूदियों और नेताओं के सामने, शिष्यों के सामने, चिन्ह, 12:20, 30, और 31. उद्देश्य कथन कहता है कि वे विश्वास करें और अनंत जीवन पाएँ। यह कहता है कि हालाँकि उन्होंने इतने सारे चिन्ह देखे थे, फिर भी उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया।

सातवाँ और सबसे बड़ा संकेत था लाज़र का मृतकों में से जी उठना। जैसा कि मैंने पहले कहा, उन्होंने लाज़र के लिए मृत्यु वारंट जारी किया। यीशु ने उसे अध्याय 11 में जीवित किया।

उन्होंने अध्याय 12 में लाज़र के लिए मृत्यु वारंट जारी किया। वे प्रकाश को स्वीकार नहीं करेंगे। उन्होंने दुनिया के प्रकाश को बंद कर दिया, और वे शापित हैं।

वे दोषी ठहराए गए हैं। यूहन्ना अध्याय 52 में यशायाह की भविष्यवाणी की पूर्ति देखता है, जो अध्याय 53 में प्रभु के सेवक के महान गीत, सेवक गीत की शुरुआत है। हे प्रभु, हमसे जो सुना, उस पर किसने विश्वास किया है? प्रभु का भुजबल किस पर प्रकट हुआ है? इसलिए, वे विश्वास नहीं कर सके।

यह पापियों की खुद पर विश्वास करने की अक्षमता के सिद्धांत को सिखाता है। फिर से, यशायाह ने कहा, उसने उनकी आँखें अंधी कर दी हैं, अध्याय 6 में वापस, यशायाह के आह्वान के बाद, और उनके दिलों को कठोर कर दिया है, ताकि वे अपनी आँखों से न देखें और अपने दिलों से न समझें, और फिर, और मैं उन्हें चंगा कर दूँ। यशायाह ने ये बातें इसलिए कही क्योंकि उसने उसकी महिमा देखी थी।

यशायाह 6 का ईश्वरीय दर्शन एक मसीही दर्शन था। यह न केवल परमेश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन था, बल्कि यह परमेश्वर के पूर्व-अवतार पुत्र का प्रत्यक्ष दर्शन था। यशायाह ने ये बातें देखीं क्योंकि उसने उसकी महिमा देखी और उसके बारे में बात की।

मेरा अपना मानना है कि यहाँ एक व्यतिक्रम है। A, यशायाह 52, 53 से श्लोक 38 में उद्धरण है। B, यशायाह 6 से श्लोक 40 में उद्धरण है।

बी प्राइम श्लोक 41ए है। यशायाह ने यशायाह 6 में अपनी महिमा देखी, प्रभु की महिमा ऊँची और ऊपर उठी हुई है, सेनाओं का प्रभु प्रभु यीशु है, पूर्व-अवतार, और उसके बारे में बी प्राइम कहा, जो कि ए प्राइम है, क्षमा करें, यह यशायाह 53 पर वापस जाता है, यह एक नया नियम प्रमाण है कि यशायाह 53, 52:12 से 53:13 एक इकाई है, सेवक, वह अंतिम महान सेवक गीत, जो कि यीशु मसीह की भविष्यवाणी है। फिर भी, यहाँ तक कि कई अधिकारियों ने भी उस पर विश्वास किया, लेकिन यहूदियों के डर से, उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया ताकि उन्हें आराधनालय से बाहर न निकाल दिया जाए।

मुझे खेद है, लेकिन जॉन के सुसमाचार का पूरा अध्ययन करने पर, हम इसे अपर्याप्त विश्वास कहते हैं। अध्याय 2 में ही, हम पाते हैं कि यीशु ने खुद को उन लोगों के प्रति समर्पित नहीं किया जो उस पर विश्वास करते हैं। एक मिनट रुकिए, कुछ गड़बड़ है।

जॉन के पास एक सिद्धांत है, जो पाठ्य भिन्नता के आधार पर 199 या 100 बार है। जॉन विश्वास की बात करता है, यीशु पर विश्वास करने के विश्वास की नहीं। कभी भी विश्वास शब्द का प्रयोग न करें। और उनमें से, आधा दर्जन ऐसे उदाहरण हैं जो किसी न किसी तरह से अपर्याप्त या झूठे या अपर्याप्त विश्वास के हैं।

यहाँ एक और उदाहरण है। यदि वे वास्तव में विश्वास करते हैं, तो वे इसे स्वीकार करेंगे। जैसा कि अंधे, भूतपूर्व अंधे व्यक्ति ने अध्याय 9 में किया था। क्योंकि वे परमेश्वर से मिलने वाली महिमा से अधिक मनुष्य से मिलने वाली महिमा को पसंद करते हैं।

आप उस अपर्याप्त विश्वास को कैसे पहचानते हैं, यह निश्चित रूप से उन कथनों का तात्कालिक संदर्भ है। ईश्वर के शाश्वत पुत्र का अवतार एक महान रहस्योद्घाटन, विशेष रहस्योद्घाटन है। मेरा मतलब सिर्फ़ उस घटना से नहीं है जिसकी गवाही चरवाहों और बाद में ज्योतिषियों ने दी थी।

मेरा मतलब है घटना के बाद का जीवन और घटना के बाद की मृत्यु और पुनरुत्थान। फिर भी, यूहन्ना के सुसमाचार में, हम अवतार में विशेष रहस्योद्घाटन देखते हैं। यूहन्ना के दूसरे प्रमुख विषय में, यीशु प्रकटकर्ता, प्रकाश है।

वह जीवनदाता भी है। वह अनंत जीवन प्रदान करता है। हम इसे अध्याय 6 में पहले ही देख चुके हैं; ठीक है, हम इसे अध्याय 1 में भी देखते हैं। वह अपने अंदर वचन के रूप में निवास करने वाले अनंत जीवन के आधार पर सृष्टि को जीवन देता है।

अपने जीवन की रोटी के प्रवचन के हिस्से के रूप में, सबसे पहले, यीशु ने संकेतों को जोड़ा, रोटियों और मछलियों को गुणा करना, और जीवन प्रवचन की रोटी का उपदेश दिया। इसके हिस्से के रूप में, वह कहता है, यूहन्ना 6, 35, मैं जीवन की रोटी हूँ। जो कोई मेरे पास आएगा, वह भूखा नहीं रहेगा।

जो मुझे पर विश्वास करता है, वह कभी प्यासा नहीं होगा। वह जीवन की रोटी है, जैसे कि भौतिक रोटी को पहली सदी में फिलिस्तीनियों और यहूदियों के लिए जीवन का आधार कहा जा सकता था क्योंकि यह थी। यह उनके आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।

वह जीवन की आध्यात्मिक रोटी है, और जो कोई उस पर विश्वास करता है वह जीवित रहेगा। वह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है, श्लोक 41, और मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जो कोई विश्वास करता है, 47, उसके पास अनन्त जीवन है। मैं जीवन की रोटी हूँ।

यीशु जीवनदाता है, ठीक वैसे ही जैसे नियमित रोटी हमारे शारीरिक जीवन को बनाए रखती है, और जीवन का आधार है। इसलिए, यीशु, जीवित रोटी, जिसे पुराने नियम में मन्ना ने केवल एक प्रतीक के रूप में इंगित किया था, प्रतिरूप है, और वह आध्यात्मिक जीवन देता है जैसे रोटी शारीरिक जीवन प्रदान करती है। यह विषय अध्याय 10 में लिखा गया है, जहाँ यीशु कहते हैं, मैं अच्छा चरवाहा हूँ।

अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। आप कहते हैं, ओह, आपका मतलब है, जब आप कहते हैं कि वह जीवन देने वाला है, तो आपका मतलब है कि वह अपनी जान देता है। वह अपनी जान देता है, और अध्याय 10 जॉन के सुसमाचार में इसका महान स्थान है, लेकिन नहीं, मेरा मतलब है, जो अपना जीवन देता है और फिर से लेता है, वह उपहार के रूप में अनन्त जीवन देता है।

वह इसे उन सभी को उपहार के रूप में देता है जो उस पर विश्वास करते हैं। मैं अच्छा चरवाहा हूँ, श्लोक 14। मैं अपने लोगों को जानता हूँ, और मेरे अपने मुझे जानते हैं।

आप कहते हैं, मुझे दिखाओ, इस अच्छे चरवाहे के प्रवचन में जीवन देने का यह तरीका। श्लोक 28, मैं अपनी भेड़ें देता हूँ, मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं, 27, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरा अनुसरण करती हैं। यह बकरियों के विपरीत है।

तुम हमें कब तक उलझन में रखोगे, आयत 24? यदि तुम मसीह हो, तो हमें साफ-साफ बताओ। यीशु ने कहा, मैंने तुमसे कहा, और तुम विश्वास नहीं करते। जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ, वे मेरे बारे में गवाही देते हैं।

लेकिन तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो। ये कठोर शब्द हैं। यह सच है, और वे उसकी भेड़ें नहीं हैं क्योंकि वे विश्वास नहीं करते, और वास्तव में, इस तरह की कहावत ज्यादा प्रचलित होगी, शब्द नहीं बल्कि अवधारणा।

लेकिन यहाँ वह कहता है, वे विश्वास नहीं करते क्योंकि वे उसकी भेड़ें नहीं हैं। जैसा कि आपको पहले बताया गया है, यूहन्ना के चुनाव के तीन विषयों में से एक यह है कि यीशु ही चुनावकर्ता है, यूहन्ना 15, 16 और 19। पिता कई जगहों पर लोगों को पुत्र को देता है, अध्याय 17 में चार बार।

यह उस अध्याय को कई तरीकों से नियंत्रित करता है। लेकिन फिर यह, परमेश्वर के लोगों की पूर्ववर्ती पहचान, और इस स्थान पर, उन लोगों की जो परमेश्वर के लोग नहीं हैं। तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो।

मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं। यहाँ उसका जीवनदाता होना है। मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, यूहन्ना 10:28।

मुझे हाल ही में पता चला कि मैंने इस तरह की भाषा को कम करके आंका था। पहले से ही, यह कहावत सिखाती है कि वे कभी नष्ट नहीं होंगे। थॉमस श्राइनर ने मुझे सिखाया कि उन्होंने एक किताब लिखी है, यह अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है, लेकिन यह क्रिस्टोफर मॉर्गन की व्यवस्थित धर्मशास्त्र पुस्तकों की श्रृंखला, ईश्वर के लोगों के लिए धर्मशास्त्र के लिए मोक्ष पर आ रही है।

श्राइनर और मॉर्गन ने मिलकर उस किताब पर काम किया। यह मेरे लिए थोड़ी मदद है। किसी भी मामले में, जब यीशु कहते हैं, मैं अनन्त जीवन देता हूँ, तो यह हमेशा के लिए रहने वाला है।

वे गिरेंगे नहीं। लेकिन फिर वह कहता है, निश्चित रूप से, वे कभी नष्ट नहीं होंगे, जो ग्रीक में कहने का सबसे मजबूत तरीका है, एक जोरदार निषेध।

एक मजबूत, बहुत मजबूत, सबसे मजबूत नकारात्मक। वे कभी भी नष्ट नहीं होंगे। और कोई भी उन्हें मेरे हाथ से नहीं छीन पाएगा।

मेरा पिता जिसने मुझे ये सब दिया है, वह सब से बड़ा है। बेशक, वह पिता है। बेटा देहधारी है।

पुत्र पिता के अधीन नहीं है। और फिर भी, पुत्र पिता के बराबर है, जैसा कि हम दो आयतों, एक आयत में देखेंगे। और कोई भी उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता, उन्हें छीन नहीं सकता।

पिता हूँ, इरविन। यह छीनने का क्या मतलब है? एक छात्र के रूप में जिसने मुझे सालों पहले पढ़ाया था, जॉन कम उदाहरणों को कवर करने के लिए चरम उदाहरणों का उपयोग करता है। यह सिर्फ लेने के बारे में नहीं कहता है; यह कहता है कि कोई भी शारीरिक रूप से छीन नहीं सकता है।

शैतान तुम्हें मेरे हाथ से नहीं छीन सकता। इसलिए, बेशक, कोई भी तुम्हें मेरे हाथ से नहीं छीन सकता। जॉन चरम सीमा पर चला जाता है।

वह यीशु की भेड़ों को चरवाहे से अलग करने के सबसे जोरदार प्रयास को कवर करता है। और यह विफल हो जाता है क्योंकि भेड़ों को सुरक्षित रखने की उनकी क्षमता में वह और पिता एक हैं, श्लोक 30।

यूहन्ना 10:30 यीशु और परमेश्वर के सार के बारे में कोई दार्शनिक कथन नहीं है। नहीं। नहीं।

यह संदर्भ दिखाता है कि यीशु परमेश्वर है क्योंकि वह ईश्वरीय कार्य करता है जिसे धर्मशास्त्री संरक्षण कहते हैं। परमेश्वर बचाता है, और परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करता है। वह उन्हें सुरक्षित रखता है।

और यीशु अपनी भेड़ों को अनंत जीवन देता है। तो यह हमेशा के लिए रहने वाला है। वह कहता है कि वे कभी नाश नहीं होंगे।

वह कहता है कि भेड़ें उसके और पिता के हाथों में सुरक्षित हैं। और भेड़ों को सुरक्षित रखने में पिता और वह एक हैं। यीशु जीवनदाता है।

हम इसे अध्याय 11 और श्लोक 25 में देखते हैं जब वह यह कथन करता है कि मैं हूँ। तुम्हारा भाई फिर से जी उठेगा, यीशु ने अभी-अभी मार्था से कहा था। वह एक अच्छी यहूदी स्त्री है।

वह पुराने नियम को जानती है। वह यशायाह 25:26 और दानिय्येल 12:2 को जानती है। वह इसे शायद यहजेकेल 37 से जानती है।

शायद वह भजन 16 को उसी तरह समझती है जिस तरह पतरस और पौलुस समझते थे। लेकिन वह यह जानती है। मैं जानता हूँ कि वह अंतिम दिन पुनरुत्थान में फिर से जी उठेगा, यूहन्ना 11:24।

फिर यीशु ने चौंका देने वाला बयान दिया। मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूँ। क्या बयान है।

ओह, मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ। पहले उसने कहा था, मेरे शब्द आत्मा हैं, और मेरे शब्द जीवन हैं। अब वह कहता है कि वह स्वयं पुनरुत्थान और अनन्त जीवन है।

जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, चाहे वह मर भी जाए, फिर भी वह जीवित रहेगा। जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी भी अनंत काल तक नहीं मरेगा। क्या आप इस पर विश्वास करते हैं? और मुझे मार्था के ये सुंदर शब्द बहुत पसंद हैं।

हाँ, प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ कि आप मसीह हैं, परमेश्वर के पुत्र जो संसार में आने वाले हैं। यह अध्याय 20:30, और 31 के उद्देश्य कथन की प्रत्याशा है। पुनरुत्थान से पहले भी, लाज़र का पुनरुत्थान।

मैं ऐसा इसलिए नहीं कह रहा हूँ क्योंकि भाषा अलग है, बल्कि जैरस की बेटी, नैन के बेटे की विधवा और लाज़र के पुनरुत्थान में, एक जैसी भाषा का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन आप क्रियाओं और अन्य बातों से यह साबित नहीं कर सकते कि ये पुनर्जीवन हैं और अंतिम पुनरुत्थान नहीं हैं। लेकिन यह कुल संदर्भ और विचारों से ही साबित हो सकता है। संभवतः, वे सभी फिर से मर गए।

लाज़र अभी भी निकट पूर्व में इधर-उधर नहीं भाग रहा है। इसलिए हम धर्मशास्त्रीय रूप से कहते हैं, वे पुनर्जीवन हैं। यीशु ने मृतकों को फिर से जीवित किया, लेकिन अपने स्वयं के पुनरुत्थान और प्रभु यीशु और उसके लोगों के अंतिम दिन के पुनरुत्थान के समान नहीं।

फिर यीशु अपने मृत मित्र लाज़र को वापस जीवित करके यह प्रदर्शित करते हैं कि वे पुनरुत्थान और जीवन हैं। यीशु ने यहूदी मान्यताओं के अनुसार जानबूझकर तीन या चार दिन तक प्रतीक्षा की, क्योंकि आत्मा शरीर के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। उन्होंने जानबूझकर उस समयावधि से अधिक प्रतीक्षा की, और वे मृत्यु से द्रवित हो गए।

प्रथम कुरिन्थियों 15 हमें बताता है कि यह अंतिम शत्रु है। मैंने एक बार एक उपदेशक को यह कहते हुए देखा, मैं अंतिम संस्कार नहीं करता। खैर, भगवान उसे आशीर्वाद दें।

मैं जानता हूँ कि वह ईश्वर का आदमी और एक अच्छा इंसान था, लेकिन यह गलत है। पुजारियों को अंतिम संस्कार करने की ज़रूरत होती है, और हमें रोने वालों के साथ रोना चाहिए। और यीशु रोया।

ओह, वह उनके अविश्वास पर रोया। मैंने वास्तव में एक बार ऐसा सोचा था। नहीं, वह रो रहा है।

वह भावुक हो गया है। वह पेशेवर रोने वालों से भावुक हो गया है। वह मेरी और मार्था से भावुक हो गया है।

और अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति से प्यार करते हैं, जो किसी रिश्तेदार या दोस्त की मृत्यु पर मर जाता है, तो आप भी दुखी हो सकते हैं। और इसमें कुछ भी अध्यात्मिक नहीं है, भगवान के लिए। मृत्यु अंतिम शत्रु है, और ईश्वर उस पर विजय प्राप्त करेगा।

उसने पहले ही सिद्धांत रूप में यह कर दिया है, और हम अब नश्वर शरीर में अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं, लेकिन वे नश्वर शरीर हैं। इसलिए, हम अभी भी मरते हैं। लेकिन एक दिन आ रहा है जब मरे हुएों को जीवित किया जाएगा।

और यीशु उसमें भाग लेता है। मुझे यह बहुत पसंद है। पत्थर हटाओ।

मार्था ने कहा, प्रभु, अब तक तो बदबू आ रही होगी। उसे मरे हुए कई दिन हो चुके हैं। यीशु ने उससे कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि अगर तुम विश्वास करोगी तो तुम परमेश्वर की महिमा को देखोगी? और उन्होंने ऐसा ही किया क्योंकि यीशु ने पिता को जीवनदाता के रूप में प्रकट किया था।

जॉन के सुसमाचार में वह तीन लोगों को जीवन देता है: लाजर, जो चार दिन पहले ही मर चुका था। बेहोशी का सिद्धांत लाजर के लिए काम नहीं करेगा। ओह, मेरा वचन।

यीशु जीवनदाता है। वह पिता को प्रकट करता है जो अच्छा चरवाहा है, वह पिता जो 99 को छोड़कर जाता है और खोई हुई एक भेड़ को ढूँढ़ता है। परमेश्वर खोजी परमेश्वर है, वह परमेश्वर जो पापियों से प्रेम करता है।

इसे दिखाने के लिए मेरा आखिरी स्थान जॉन 15 है, जो इस्राएल के विरुद्ध है, जो प्रभु की दाख की बारी थी, लेकिन जो बार-बार असफल हुई; यशायाह पाँच इसे बहुत अच्छी तरह से दिखाता है। मैं सच्ची दाखलता हूँ। मेरे पिता दाख की बारी के मालिक हैं।

मैं सच्ची दाखलता हूँ। अगर तुम मुझमें बने रहोगे, मुझमें बने रहोगे, तो तुम जीवित रहोगे। जैसे दाखलता शाखाओं को जीवन देती है।

तो, यीशु, सच्ची दाखलता, इसका क्या मतलब है? सत्य। मेरा मतलब है, इस्राएल एक झूठी दाखलता थी। नहीं, इस्राएल एक सच्ची दाखलता थी, लेकिन वह असफल हो गई।

जॉन के सुसमाचार में यह बात सच है, पुराने नियम के विपरीत, पुराने नियम के पूर्ववर्तियों के प्रकाश में, उनका पूरा होना, उनका समापन उन्हें झूठा नहीं बनाता। यह उन्हें हीन बनाता है। और अब, ईश्वर के रहस्योद्घाटन के संदर्भ में कहें, तो किसी को बचाए जाने के लिए इज़राइल में शामिल होने की आवश्यकता नहीं है।

एक सामरी महिला यीशु पर विश्वास कर सकती है और बच सकती है। वास्तव में, यूहन्ना चार में यीशु ने एक ऐसे समय की भविष्यवाणी की है जब लोगों को आराधना करने के लिए यरूशलेम जाने की आवश्यकता नहीं होगी। एक चौकाने वाली धारणा जिसे हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में पूरा होते हुए पाते हैं, नए नियम में विशेष रहस्योद्घाटन हमारे प्रभु यीशु के अवतार में सर्वोपरि है।

वह दुनिया का प्रकाश है जो लोगों को ईश्वर के रहस्योद्घाटन से रोशन करता है जो पहले कभी नहीं हुआ। वह जीवनदाता है जो अपने बेटे पर विश्वास करने वालों को जीवन देने में ईश्वर के हृदय

को दर्शाता है और जो अपने स्वयं के पुनरुत्थान के प्रतीक के रूप में लाजर को पुनर्जीवित करता है। और अंतिम दिन के पुनरुत्थान के प्रतीक के रूप में, वह ईश्वर का पुत्र है।

हम इसे कई जगहों पर देखते हैं। हम इसे यूहन्ना 5, यूहन्ना 5:17 और 18 में देखते हैं। संदर्भ महत्वपूर्ण है।

इस बार, यीशु किसी अंधे आदमी को ठीक नहीं करते। यह अध्याय नौ में है। यहाँ, वे एक ऐसे आदमी को ठीक करते हैं जो 38 साल से लकवाग्रस्त है।

अध्याय 90 में जन्म से अंधे व्यक्ति को ठीक किया गया। यहाँ, वह एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को ठीक करता है जो 38 साल से बीमार है। और, बेशक, वह शनिवार को जानबूझकर अधिकारियों को चुनौती देने के लिए ऐसा करता है, जिसे मैं लंबे समय में दया का कार्य मानता हूँ।

सुनिश्चित करें कि मैंने अपने संदर्भ सही ढंग से लिखे हैं। प्रेरितों के काम 6:7, परमेश्वर का वचन यरूशलेम में शिष्यों की संख्या में लगातार वृद्धि करता गया और बहुत से याजक विश्वास के आज्ञाकारी बन गए। प्रेरितों के काम 6:7.

मेरा मानना है कि यीशु ने शनिवार को अपने सभी उपचार और अन्य महान कार्य करके, परमेश्वर की आत्मा के लिए मार्ग तैयार किया, ताकि उन लेवियों को भी पुनर्जीवित किया जा सके, जिन्होंने यीशु में अपना सच्चा मसीहा पाया। यीशु द्वारा लकवाग्रस्त व्यक्ति को ठीक करने के बाद, अपना बिस्तर उठाओ और चलो। यहूदी नेताओं को उस व्यक्ति के चलने के बारे में बहुत उत्साहित होना चाहिए।

इसके बजाय, वे सब्त के दिन उसके बिस्तर को ले जाने के बारे में शिकायत कर रहे हैं। ओह, 17 और 18 गंभीर हैं। 16.

खैर, 15, वह आदमी चला गया और यहूदियों से कहा कि यह यीशु था जिसने उसे चंगा किया। यूहन्ना 5, 16. और यही कारण था कि यहूदी यीशु को सता रहे थे क्योंकि वह सब्त के दिन ये काम कर रहा था।

लेकिन यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, मेरे पिता अब तक काम कर रहे हैं, और मैं भी काम कर रहा हूँ। यही कारण है कि यहूदी उसे मारने के लिए और भी अधिक प्रयास कर रहे थे क्योंकि न केवल वह सब्त का उल्लंघन कर रहा था। मेरा मतलब है, निश्चित रूप से पुराने नियम में कहा गया है कि तुम सब्त के दिन अपाहिजों को ठीक नहीं करोगे, है न? नहीं।

हे भगवान। लेकिन वह तो भगवान को अपना पिता भी कह रहा था, खुद को भगवान के बराबर बता रहा था। अब, एक मिनट रुकिए।

वे कहेंगे कि ईश्वर एक तरह से उनके पिता थे। ओह, लेकिन इस तरह से नहीं। वह कौन सा अर्थ है? हम इसे अध्याय में, श्लोक 17 में देखते हैं, क्षमा करें।

मेरे पिता अभी भी काम कर रहे हैं और मैं भी काम कर रहा हूँ। तल्मूड न्यू टेस्टामेंट से बाद में लिखा गया है। और फिर भी, कभी-कभी, यह न्यू टेस्टामेंट के विचारों और अवधारणाओं पर प्रकाश डालता है।

रब्बियों ने तल्मूड की किताबें लिखने में बहुत समय और मेहनत की, और उन्होंने चिरकालिक प्रश्नों को संबोधित किया, उन्होंने चुटकुले सुनाए, और उन्होंने सभी तरह की चीज़ें कीं। वहाँ ज्ञान है, वहाँ सब कुछ है। तल्मूड ज्ञान सहित बहुत से यहूदी साहित्य का मिश्रण है।

इस मामले में, यहूदियों ने बहस की। उत्पत्ति कहती है कि परमेश्वर ने सातवें दिन विश्राम किया। हम जानते हैं कि परमेश्वर सब्त के दिन काम नहीं करता।

वह नहीं चाहता कि हम सब्त के दिन काम करें। लेकिन हम जानते हैं कि वह सब्त के दिन काम करता है। हाँ, लेकिन वह बहुत कम काम करता है।

इस तरह की चर्चाएँ। और उन्हें यह स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया कि हाँ, स्वयं अच्छे प्रभु, चौथी आज्ञा के लेखक, अपने लोगों को सब्त का सम्मान करने के लिए कहते हुए, सब्त के दिन कुछ खास काम करते थे। तीन चीज़ें जिनसे वे बच नहीं सकते थे।

नंबर एक, यहूदी बच्चे सप्ताह के सातों दिन पैदा होते थे। वे यह नहीं कह सकते थे कि शनिवार को यहूदी बच्चों का जन्म किसी और तरीके से हुआ था। इसका मतलब है नहीं।

भगवान ने यहूदी बच्चों को भी शनिवार को ही दुनिया में लाया। यहूदी बुजुर्गों की मृत्यु भी शनिवार को ही होती थी। यही तर्क है।

भगवान ने ऐसा किया। भगवान ने उन्हें ले लिया। वे उसके लोग हैं।

और फिर उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा कि वह सप्ताह के सातों दिन अपने विधान का पालन करता था, अन्यथा वे इस तरह की चीज़ों के बारे में सोचने, इस तरह की चर्चा करने और इस तरह की चीज़ें लिखने के लिए वहाँ नहीं होते। जब यीशु कहते हैं, मेरे पिता अब तक काम कर रहे हैं, तो वे इसी तरह की चीज़ों का ज़िक्र कर रहे हैं। वे यह नहीं कह रहे हैं कि वे तल्मूड का हवाला दे रहे हैं।

यह कालभ्रमित है। इसे बाद में लिखा गया है। लेकिन ये ऐसी बातें हैं जिन्हें यहूदी समुदाय को स्वीकार करना होगा।

भगवान बच्चों को जन्म देते हैं। भगवान लोगों को मृत्यु में ले जाते हैं। और निश्चित रूप से वह अपने ईश्वरीय कार्य करते हैं, सप्ताह के सातों दिन अपनी दुनिया को बनाए रखते हैं और उसका निर्देशन करते हैं।

तो उन्हें संदेश बिल्कुल साफ-साफ मिल गया। मेरे पिता अब तक एक प्रगतिशील राष्ट्रपति के रूप में काम कर रहे हैं। मेरे पिता हमेशा काम करते रहते हैं।

वह सप्ताह में सातों दिन काम करना जारी रखता है। और मैं काम कर रहा हूँ। इन शब्दों के साथ, यीशु उनके खिलाफ़ जाता है और वास्तव में बंदूक की रोशनी उसके माथे पर डालता है, जिससे वह निशाना बन जाता है।

ओह, वे उसे पकड़ने जा रहे हैं। वे इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। क्योंकि वह लंगड़े आदमी के उपचार को सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा के समान स्तर पर रखता है।

मेरे पिता अभी भी काम कर रहे हैं। जिसे वे अपना भगवान मानते हैं, वह भी अपना पिता ही मानता है। और मैं भी काम कर रहा हूँ।

अंधे आदमी को ठीक करना, माफ़ करना, लंगड़े आदमी को ठीक करना, असल में अंधा आदमी भी, लेकिन हम लंगड़े आदमी के बारे में बात कर रहे हैं, यह मेरे पिता का काम है। और इसी वजह से, वे उसे मारना चाहते थे क्योंकि वह इस तरह से परमेश्वर को अपना पिता कह रहा था, खुद को परमेश्वर के बराबर बता रहा था। यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

वह ईश्वर का शाश्वत पुत्र है जो देहधारी होता है। ऐसा करके वह ईश्वर को प्रकट करता है। हमने इसे हाल ही में अध्याय 11 में मार्था के बारे में पढ़े गए शब्दों में देखा।

हाँ, मेरा मानना है कि आप मसीह हैं, परमेश्वर के पुत्र, 11:27, जो आने वाले थे, जो दुनिया में आने वाले हैं। यह एक दिव्य उपाधि है। हम इसे देखते हैं।

बेटा, बेटा, 2 शमूएल 7, यशायाह 9:6 और 7. हमें एक बेटा दिया गया है, एक बच्चा पैदा हुआ है, एक बेटा दिया गया है। वह अपने पिता, दाऊद के सिंहासन पर हमेशा के लिए विराजमान रहेगा। सेनाओं के यहोवा का जोश इसे पूरा करेगा।

हमने अब तक कई बार देखा है कि उद्देश्य कथन में यीशु परमेश्वर का पुत्र है। हम इसे अध्याय 19 में एक दुखद तरीके से भी देखते हैं क्योंकि, चौथे सुसमाचार के अनुसार, यहूदी नेताओं द्वारा यीशु की निंदा का आधार उसका परमेश्वर का पुत्र होने का दावा था। और मेरे पास एक गलत संदर्भ है, जिसे मैंने स्थानांतरित कर दिया है, मुझे इसके लिए खेद है।

मैंने एक संदर्भ खो दिया है, मैं क्षमा चाहता हूँ। आह, यूहन्ना 19:7, 17 नहीं। यूहन्ना 19:7, पिलातुस बार-बार कहता है, मुझे उसमें कोई दोष नहीं मिला।

उदाहरण के लिए, 19:6 में कहा गया है, "उसे ले जाओ और तुम ही उसे क्रूस पर चढ़ा दो। मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता। वे ऐसा नहीं कर सकते थे; उनके पास ऐसा करने का अधिकार नहीं था।"

ओह, उन्होंने स्तिफनुस को पत्थरवाह किया, और ऐसी परिस्थितियाँ हैं, लेकिन उनके पास इस तरह का अधिकार नहीं है। क्योंकि मैं, तुम उसे क्रूस पर चढ़ाते हो। मुझे उसमें कोई दोष नहीं मिलता।

यहूदियों ने उत्तर दिया, "हमारे पास एक कानून है, और उस कानून के अनुसार उसे मृत्युदंड मिलना चाहिए।" यह फिर से उनकी कानून-व्यवस्था है।

वे, वे कानून के आधार पर अपने मसीहा की निंदा कर रहे हैं। ओह, विडंबनाएँ बस इतनी सी हैं कि वे आपको रुला देती हैं। उस कानून के अनुसार, उसे मर जाना चाहिए क्योंकि उसने खुद को ईश्वर का पुत्र बना लिया है।

बेशक, उनका मतलब अवैध रूप से, गलत तरीके से, या अन्यायपूर्ण तरीके से त्रुटिपूर्ण तरीके से है। हमारे अगले व्याख्यान में, हम पौलुस और इब्रानियों के लेखन में अवतार में विशेष रहस्योद्घाटन को उठाएंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 12 है, नए नियम में विशेष प्रकाशितवाक्य, अवतार, यूहन्ना, जगत का प्रकाश, जीवनदाता, परमेश्वर का पुत्र।